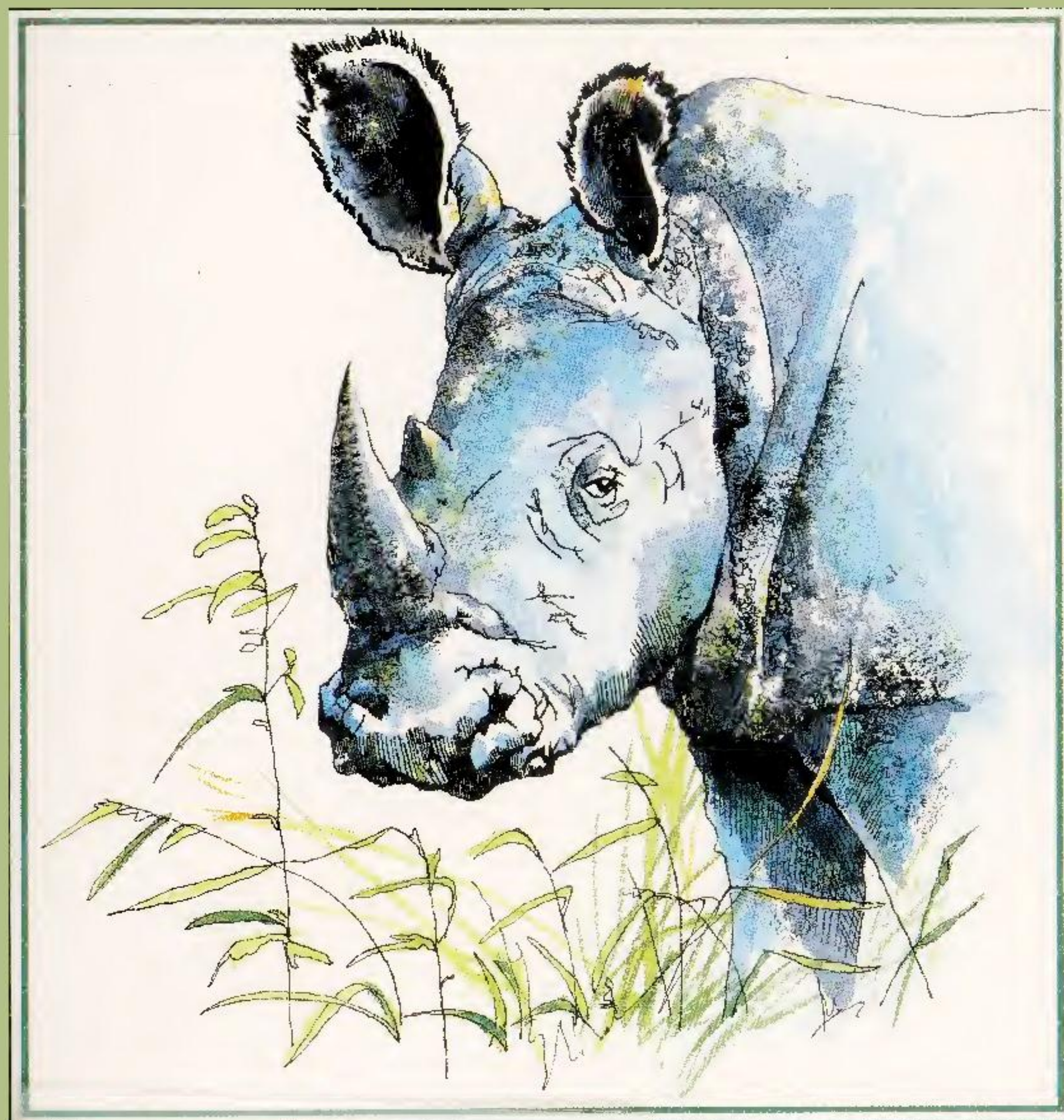
मलुंडा

लुई जॉनसन
चित्र: एडवर्ड डुरोज़
हिंदी: इंदुजी





मलुंडा

लुई जॉनसन

चित्र: एडवर्ड डुरोज़

हिंदी: इंदुजी



उसके बदन पर मोटी,
नीले-धूसर रंग की चमड़ी थी.
नाक के ऊपर लंबा, नुकीला
पीछे की ओर घूमा हुआ एक सींग था.
उस सींग के ठीक पीछे
एक और छोटा सींग था.
एक शेरनी उसे देख रही थी.
वह शेरनी की ओर कुछ कदम
आगे आया.
शेरनी रास्ते से झटपट हट गई.
वह सफेद गैंडा था.



यह सफेद गैंडा आयु में अभी छोटा था.
लेकिन वह पांच फुट ऊँचा हो चुका था.
वयस्क होते-होते उसकी ऊँचाई
छह फुट से अधिक हो जाएगी
वह चौदह फुट लंबा हो जाएगा.
और उसका वज़न
लगभग 4000 पाउंड हो जाएगा.
इसका सामने वाला सींग
लगभग 2 फुट लंबा हो जाएगा.
युवा गैंडा घास खा रहा था.
सफेद गैंडों का एक छोटा झुंड
उसके पास ही था.
झुंड में अधिकांश मादाएं थीं
और कुछ नन्हे बछड़े थे.
एक दिन वह इन सब का
मुखिया बनेगा.





झुंड के ऊपर एक हेलिकॉप्टर उड़ा.

उसकी आवाज़ बहुत तेज़ थी.

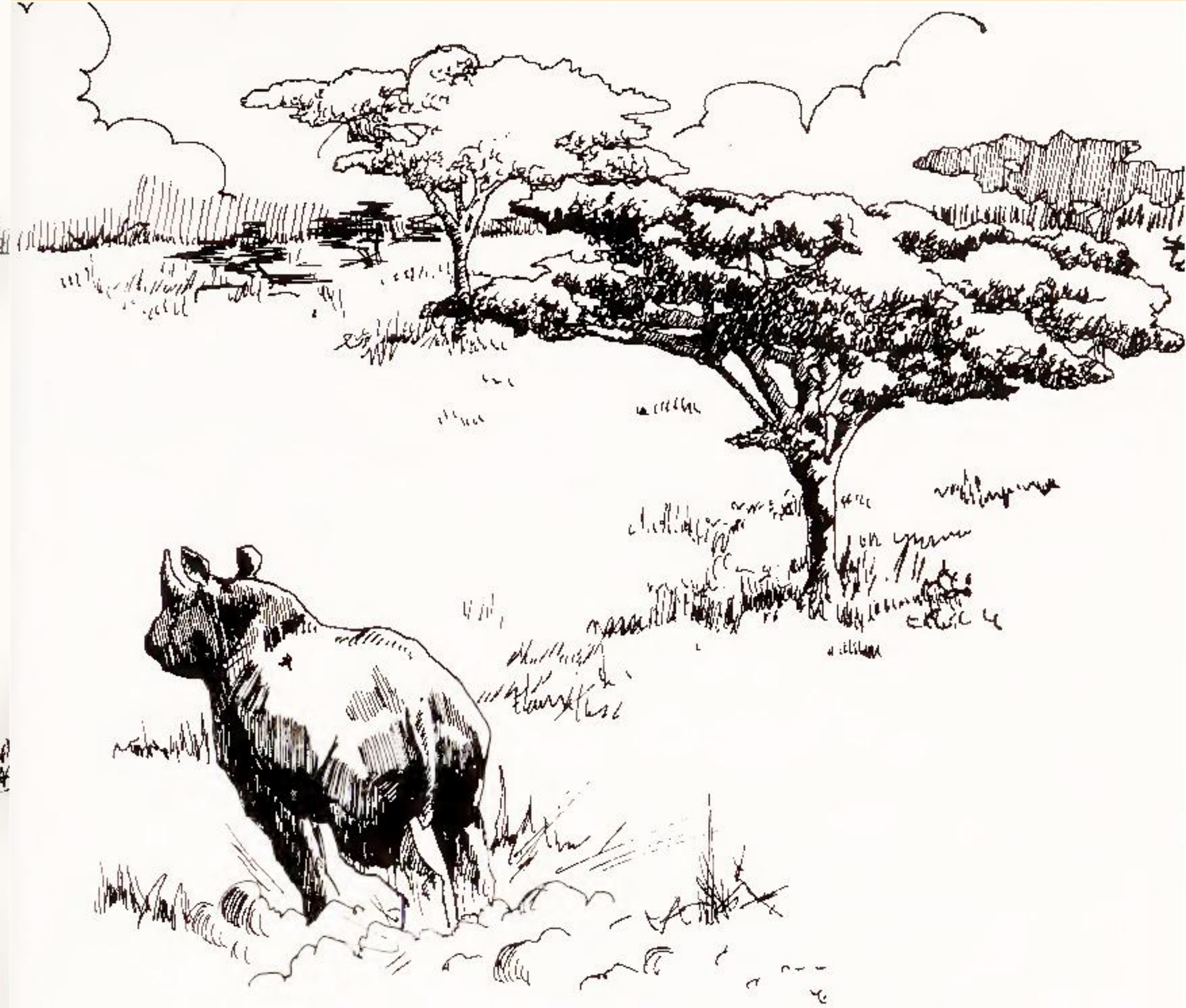
युवा गैंडा उस पर हमला करने के लिए
तैयार हो गया..

लेकिन उसे कोई शत्रु दिखाई नहीं दिया.

सफेद गैंडे गुस्सैल नहीं होते.

इसलिए वह शांत हो गया

और फिर से घास चरने लगा.



अचानक उसके कंधे पर

कोई चीज़ चुभ गई.

युवा गैंडे ने सिर घुमाकर

अपने दोनों तरफ देखा.

उसे पता न चला कि क्या चीज़

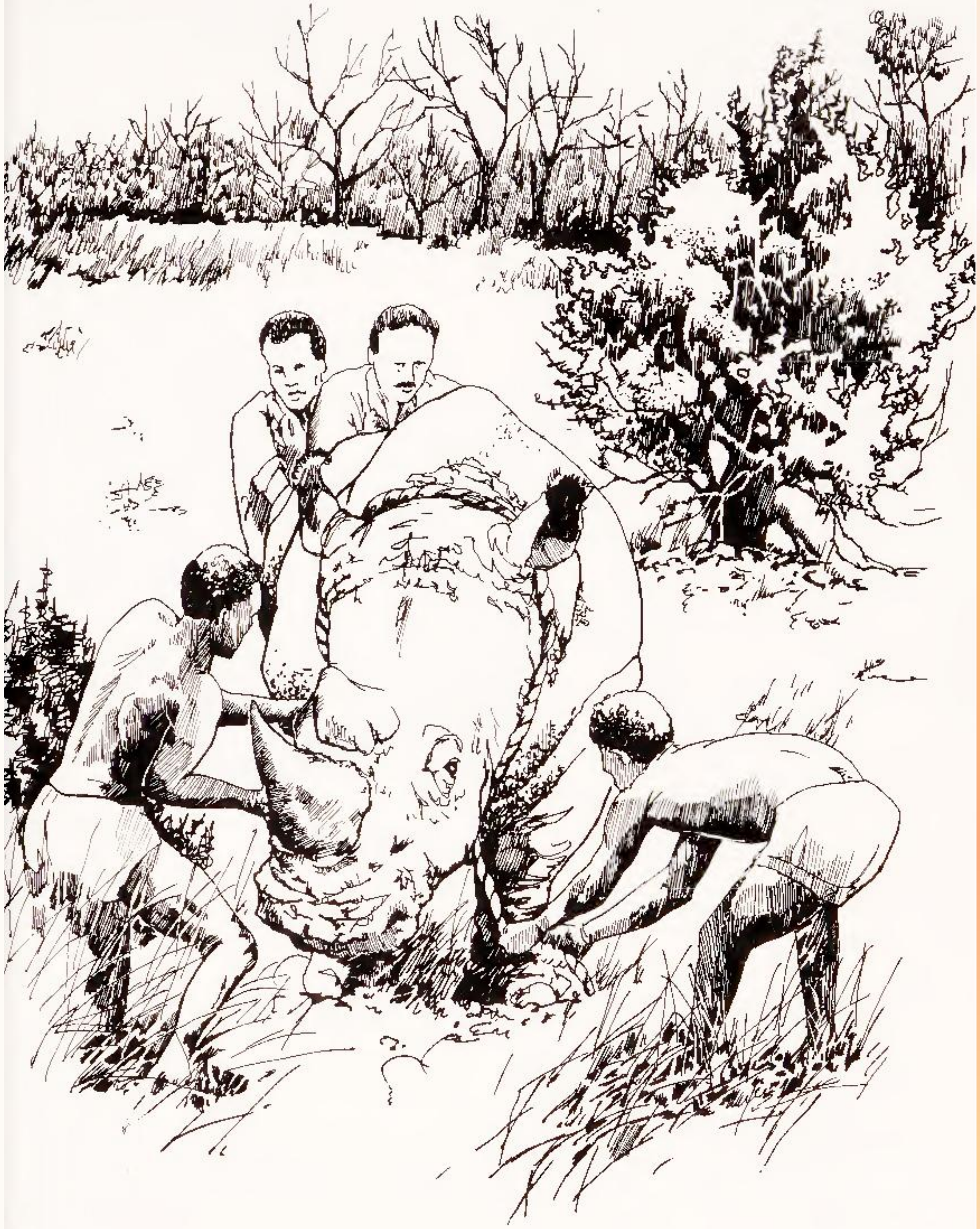
उसके बदन से टकराई थी.

वह भागने लगा.

अन्य सफेद गैंडे भी भाग रहे थे
कोई एक ओर और कोई दूसरी ओर.
उन सब पर ट्रैंक्विलाइज़र डार्ट
मारे गए थे.
ट्रैंक्विलाइज़र दवाई शीघ्र ही
उन सब को बेहोश कर देगी.
घोड़ों पर सवार लोग उनका पीछा कर रहे थे.
शीघ्र ही गैंडों की भागने की गति कम हो गई.
हर गैंडा बेहोश हो कर ज़मीन पर गिर गया.
घुड़सवारों ने ट्रकों में प्रतीक्षा कर रहे
लोगों को रेडियो द्वारा सूचित किया.
जब ट्रक पहुँचे तो उन लोगों ने हर गैंडे की
गर्दन पर एक मज़बूत रस्सी लपेट दी.



फिर उन लोगों ने गैंडों को बेहोशी
दूर करने की दवाई का इंजेक्शन लगाया.
जैसे ही गैंडे होश में आए वह लोग उन्हें
रस्सी से खींच कर लकड़ी के बड़े-बड़े
क्रेट्स (पिंजरों) के अंदर ले आए.
युवा गैंडे के पास आदमी सबसे बाद में आए.
अन्य गैंडों की तुलना में वह सबसे
दूर भागा था - वह लगभग
एक मील अधिक भागा था.
जब आदमी उसे पिंजरे की तरफ ले जाने लगे
तो उसने विरोध किया.
लोग समझ गए कि उसे पिंजरे के अंदर ले
जाना सरल न होगा.
और ऐसा ही हुआ.

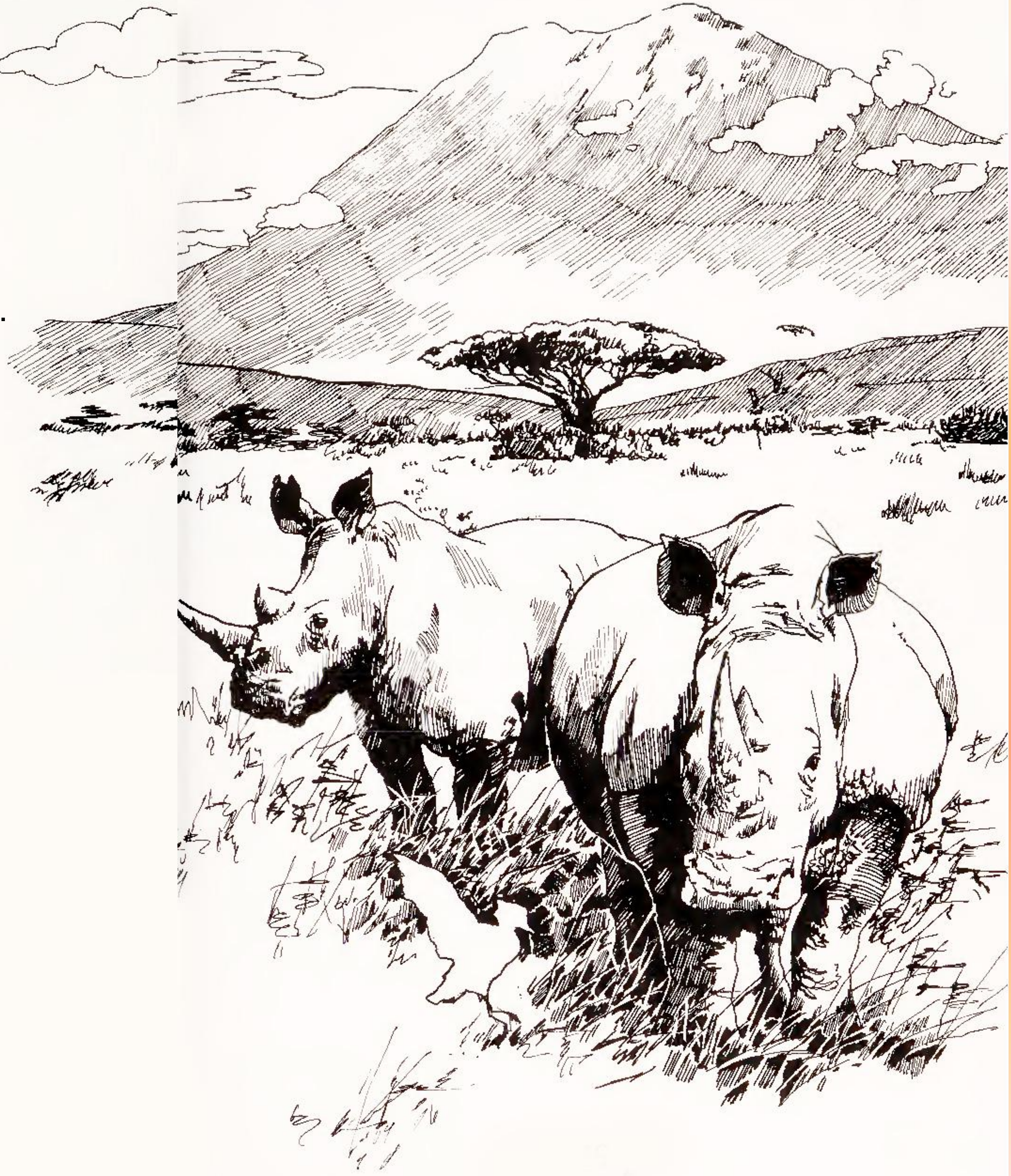




इस संघर्ष में युवा गैंडे का
लंबा सींग टूट गया.
सिर्फ छोटा सींग ही बचा.
लेकिन आखिरकार वह उसे
पिंजरे के अंदर ले आने में सफल हुए.
एक व्यक्ति को लगा कि इस गैंडे का
एक नाम होना चाहिए.

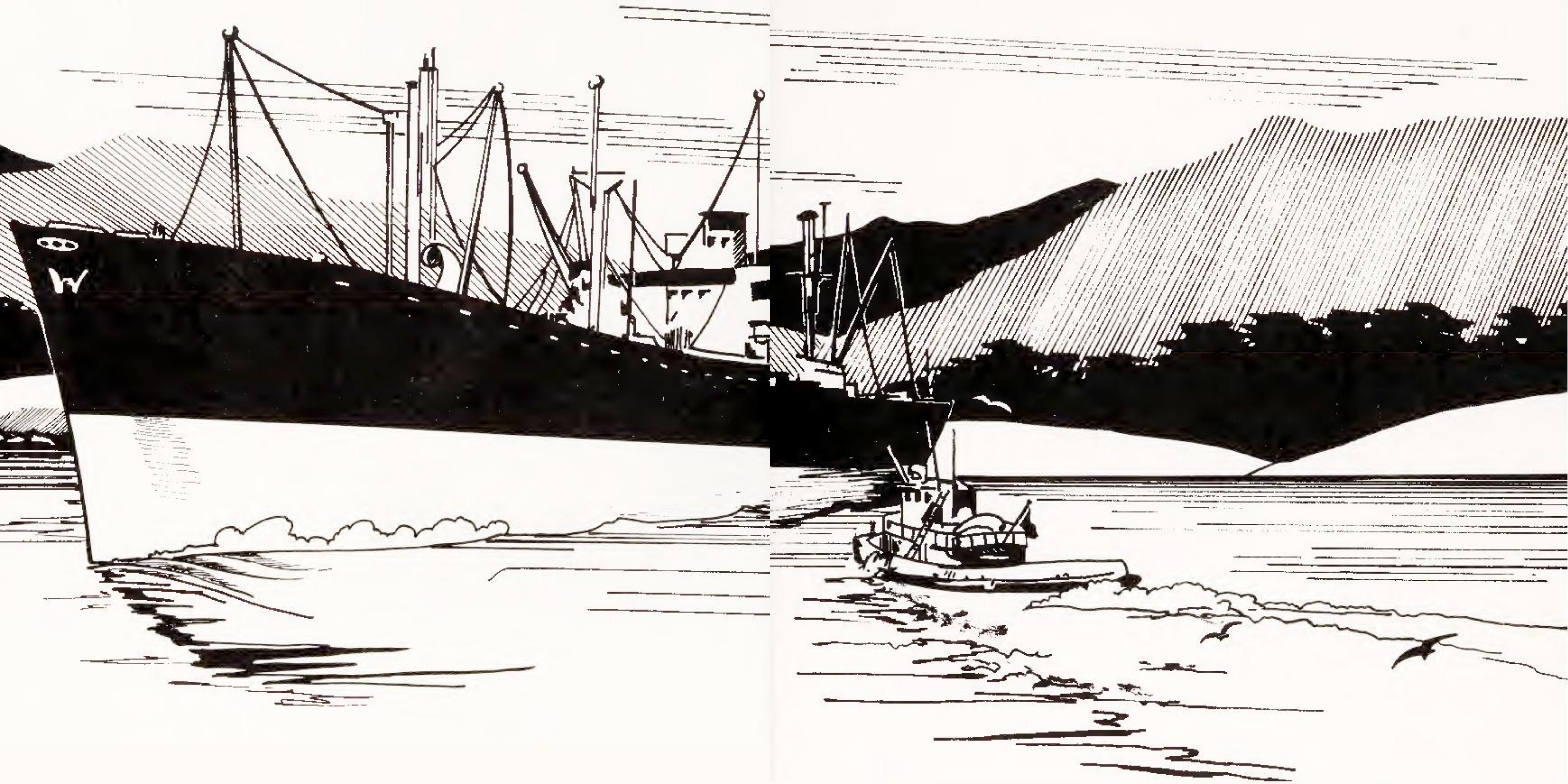
वह उसे मलुंडा बुलाने लगा.
शीघ्र ही सब लोग उसे
इसी नाम से बुलाने लगे.
मलुंडा एक अफ्रीकी नाम है.
इस का अर्थ है, “बड़ी कलगी वाला”.

सफेद गैंडे अफ्रीका में
पाए जाते हैं
यह प्रजाति विलुप्त होने की कगार पर है.
इस का तात्पर्य है कि इस प्रजाति के
गैंडों की संख्या बहुत कम है.
यह लोग सुनिश्चित करने का
प्रयास कर रहे थे कि
इन गैंडों को
विलुप्त होने से बचाया जा सके.
वह चाहते थे कि इन गैंडों को
पर्याप्त खाना और पानी मिले.
लेकिन उससे अधिक महत्वपूर्ण था
इन्हें शिकारियों से बचाना.
इसलिए मलुंडा और अन्य गैंडों को वह
उनके नए घर ले जा रहे थे.



पिंजरे इतना ऊँचा था कि
मलुंडा उसके अंदर खड़ा हो सकता था.
लेकिन इतनी जगह नहीं थी
कि वह घूम पाता.
उसके सामने इक बाल्टी रखी थी
जिसके अंदर पीने के लिए पानी था.
सूखी घास का एक ढेर भी था.
मलुंडा घास खाने लगा.





शीघ्र ही सभी पिंजरों को
ट्रकों में लाद दिया गया.
सारी रात चलने के बाद
ट्रक उन्हें समुद्र के किनारे ले आए.

जब वह समुद्र तट पर पहुँचे
एक जहाज़ उनकी प्रतीक्षा कर रहा था.
जहाज़ गैंडों को बहुत दूर इंगलैंड
ले जाने वाला था.



एक मशीन ने मलुंडा के पिंजरे को
बहुत ऊपर उठाया.
झूलता हुआ पिंजरा जहाज़ के ऊपर आ गया.
फिर वह नीचे आने लगा.
आखिरकार पिंजरा जहाज़ पर आ गया.
लेकिन मलुंडा अनोखे ढंग से
व्यवहार करने लगा था.
वह ऐसे व्यवहार कर रहा था जैसे कि
वह घायल था. जैसे ही जहाज़ चलने लगा,
मलुंडा एक ओर गिर गया.



मलुंडा के पिंजरे के पास कई लोग खड़े थे.
वह देख पा रहे थे कि
मलुंडा स्वस्थ नहीं था
लोग उसके टूटे हुए सींग की बात करने लगे.
उन लोगों ने मलुंडा को
पानी और खाना दिया था.
उनके निकट आने पर भी मलुंडा
को कोई ऐतराज़ नहीं था.
उनमें एक आदमी पशुओं का डाक्टर था.
उसके पास लंबे डंडे वाला एक ब्रश था.
डाक्टर ने ब्रश की सहायता से मलुंडा के
नाक के निकट उस जगह पर दवाई लगाई
जहाँ बड़ा सींग हुआ करता था.



डाक्टर ने हर दिन
मलुंडा की नाक के पास
दवाई लगाई.
डाक्टर चिंतित था.
दवाई का कोई असर न हो रहा था.
मलुंडा ने कई दिनों से कुछ खाया न था.
उसके शरीर का तापमान भी बड़ा हुआ था.
मलुंडा को बुखार हो गया था.
“मुझे इंजेक्शन लगा कर
इसे दवा देनी पड़ेगी,”
डाक्टर ने कहा.
डाक्टर मलुंडा के पिंजरे के ऊपर चढ़ गया.
वहीं से उसने मलुंडा के शरीर में एक लंबी सुई
घुसेड़ी और दवा उसके शरीर में इंजेक्ट कर दी.
मलुंडा हिला-डुला नहीं.



“घाव बहुत खराब हो गया है,”
डाक्टर ने कहा.
“हमें दिन-रात इस की
निगरानी करनी पड़ेगी.”
डाक्टर और अन्य लोग बारी-बारी से
मलुंडा पर नज़र रखने लगे.
वह उस पर ठंडे पानी का छिड़काव करते.
वह उसे थपथपाते और उससे बातें करते.
जहाज़ इंग्लैंड की ओर समुद्र में आगे बढ़ता रहा.





कई दिन बीत गए.
फिर एक सुबह
मलुंडा घास खाने लगा.
उस पर नज़र रख रहे आदमी चिल्लाए.

“वह खा रहा है! मलुंडा घास खा रहा है!”
डाक्टर भागता हुआ आया.
उसने मलुंडा की पीठ थपथपाई.
मलुंडा का ज्वर ठीक हो गया था.

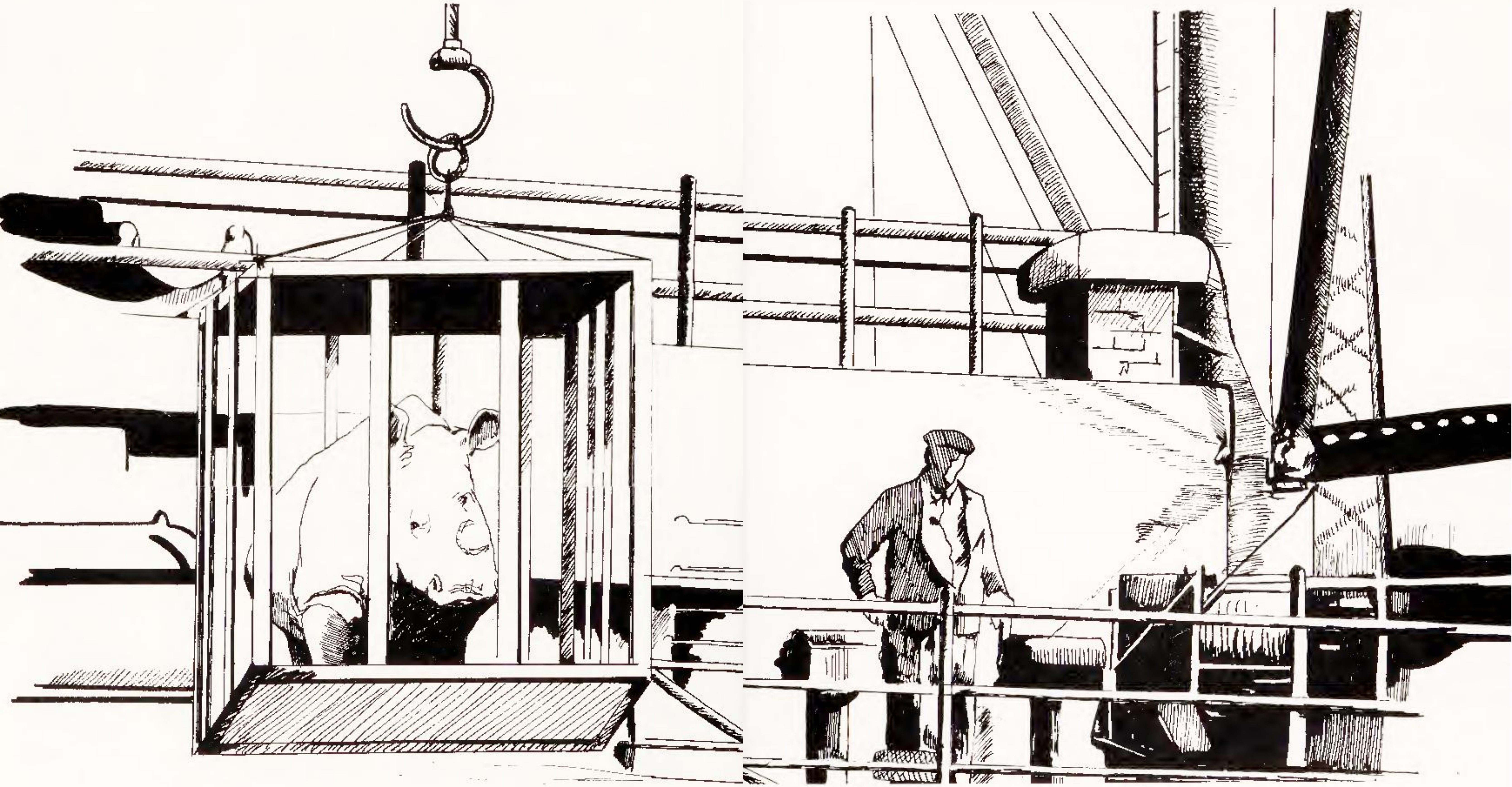




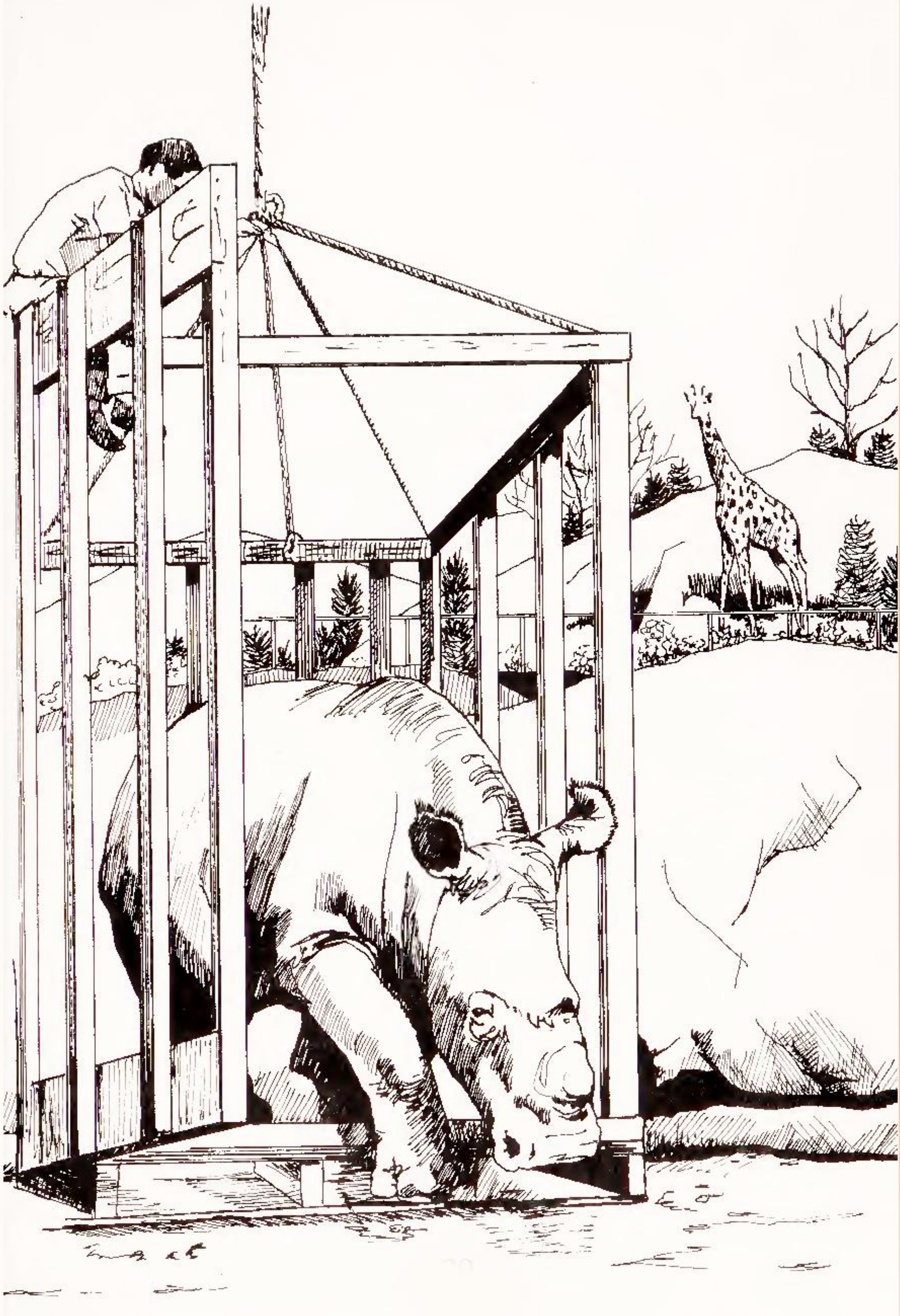
जहाज़ पर सवार सब लोग प्रसन्न थे.
वह सब मलुंडा को चाहने लगे थे.
अपने खाली समय में उन्हें मलुंडा के पिंजरे
के पास बैठना अच्छा लगता था.
यात्रा के बाकी दिनों में मलुंडा ने
अच्छे से खाया.
घास के अतिरिक्त उसे और
चीज़ें भी खाने के लिए दी गईं.
मलुंडा को इंग्लिश मफिन सबसे अधिक पसंद थे.

जब जहाज़ इंग्लैंड पहुँचा,
तब तक मलुंडा पूरी तरह स्वस्थ हो गया था.
दूसरे सफेद गैंडों के साथ मलुंडा को

ट्रकों पर चढ़ा दिया गया.
उन्हें एक ज़ू में ले जाया गया.
वहाँ पिंजरों को उतारा गया.

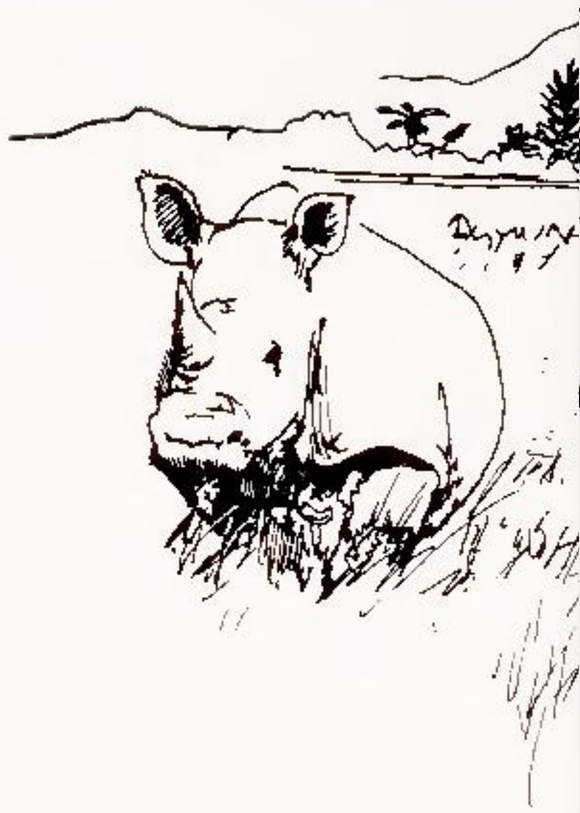


मलुंडा को सबसे पहले पिंजरे से
बाहर निकाला गया.
उसने अपने खुर ज़मीन में गाड़ दिए
और फिर कुछ कदम चला.
सूर्य चमक रहा था.
मलुंडा ने अपनी आँखें झपकाईं.
वह धीरे से पीछे घूमा.
अन्य गैंडों को भी
पिंजरों से बाहर निकाला गया.
सब गैंडे खाने की तलाश करने लगे.
सफेद गैंडे घास और हरी पत्तों वाले
पौधे खाते हैं.
वहाँ घास और हरे पौधे हर तरफ थे.
तालाब और छोटी नदियाँ भी वहाँ थीं.



मलुंडा एक तालाब के पास गया.
उसने अपना सिर झुकाया.
लेकिन उसने पानी नहीं पीया.
उसने ऐसे व्यवहार किया कि
जैसे वह पानी में अपने
प्रतिबिंब को देख रहा था.
उसने अपना सिर हिलाया
और फिर पानी में देखा.
अपना बड़ा सींग खो देने के कारण
वह लज्जित महसूस कर रहा था.

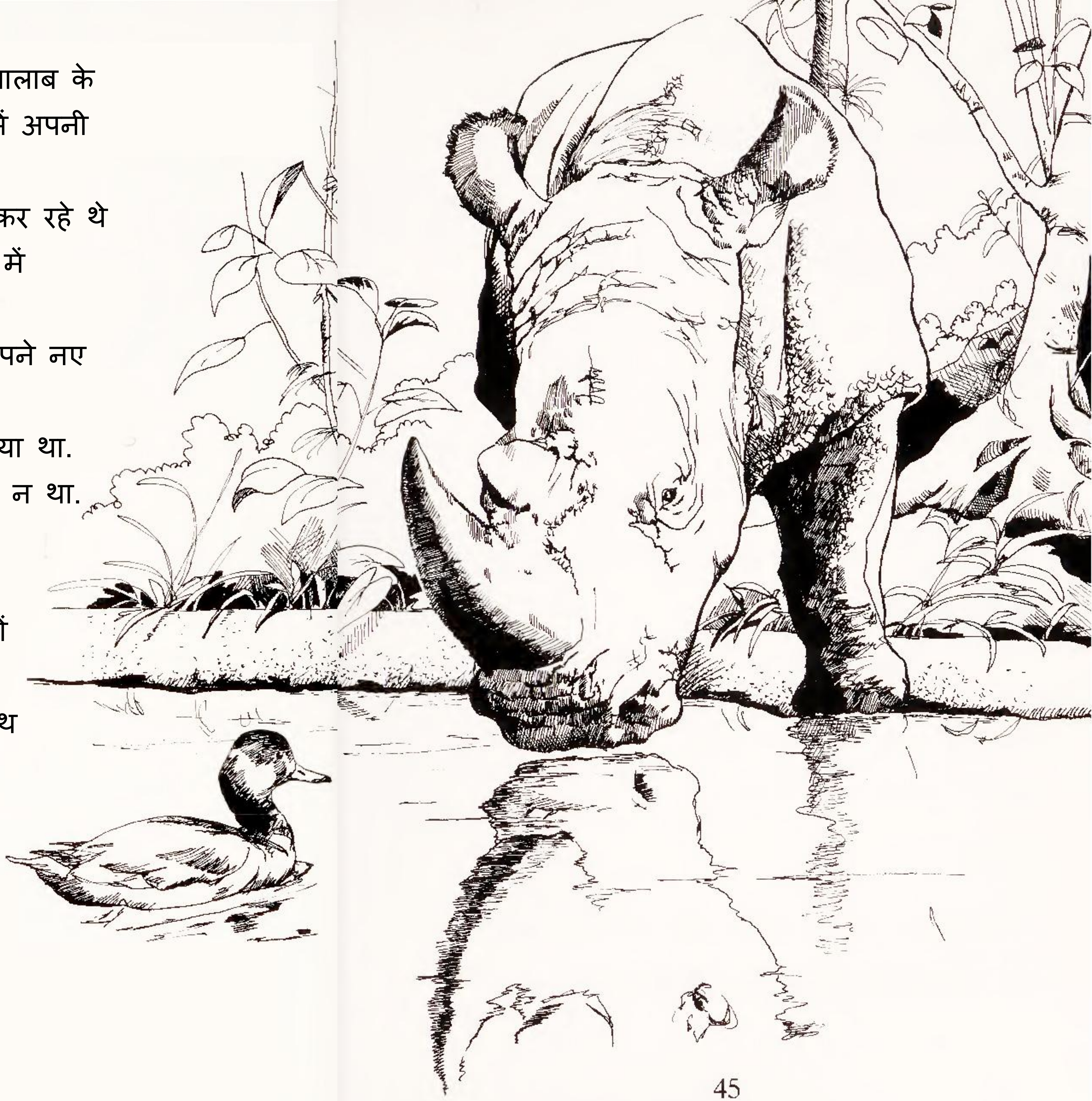




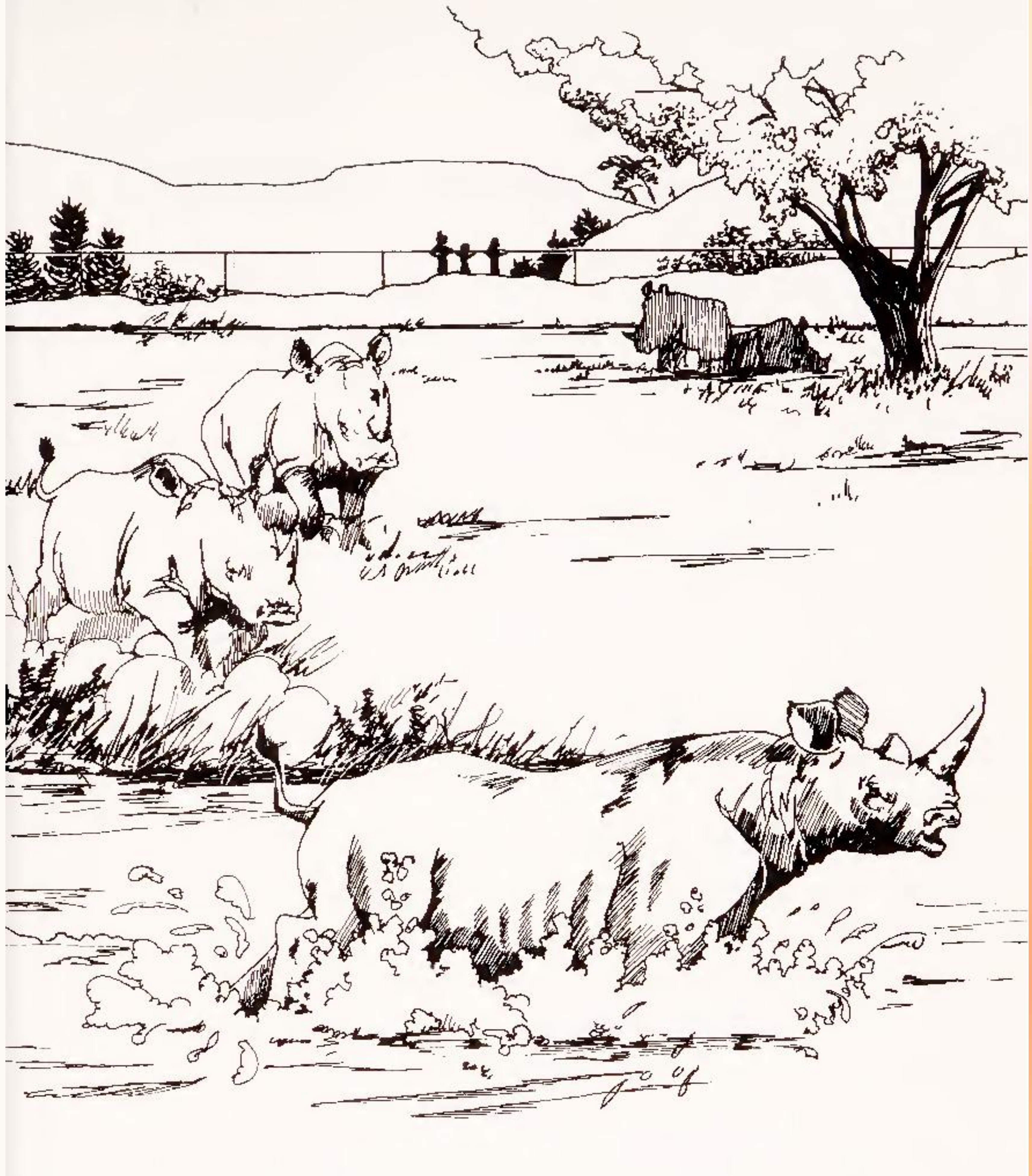
उस दिन से मलुंडा
अजीब व्यवहार करने लगा.
लंबे सींग के बिना भी वह एक
सुंदर सफेद गैंडा था.
लेकिन वह अन्य गैंडों से दूर रहने लगा
और अपना समय अकेले ही बिताता था.
वह हर समय गुस्से में रहता था.
इस तरह दो वर्ष बीत गए.
ज़ू के कर्मचारी उसके लिए चिंतित थे.
गैंडों के झुंड में एक नर ही
मुखिया होता है.
अगर मलुंडा इसी तरह व्यवहार करता रहा तो
शिशु-गैंडों का जन्म नहीं हो सकता था.



फिर एक दिन मलुंडा एक तालाब के निकट खड़ा था. वह पानी में अपनी छाया देख सकता था.
जो लोग उस की निगरानी कर रहे थे वह जानते थे कि वह पानी में अपने आप को देख रहा था.
उन्हें विश्वास था कि वह अपने नए लंबे सींग को देख रहा था.
उसका सींग फिर बड़ा हो गया था.
यह पहले सींग जितना लंबा न था.
लेकिन यह नुकीला था.
और सुंदर था!
गैंडों के सींग बालों के गुच्छों के बने होते हैं.
इसलिए समय बीतने के साथ दुबारा बड़े हो जाते हैं.



मलुंडा चल कर पानी के अंदर आ गया.
वह ज़ोर-ज़ोर की आवाज़ें निकालने लगा.
वह तालाब में इधर-उधर चलने लगा.
उसने अपना सिर ऊपर उठाया.
ऐसा लगा कि वह अपना नया सींग
सब को दिखा रहा था.
वह आगे-पीछे घूमने लगा.
उसने ऊँची आवाज़ निकाली
जैसे कि वह सब से कह रहा हो कि
उसके पास आ जाएं.
सब दौड़े आए.
उस दिन से मलुंडा शांत हो गया.
अब वह झुंड के साथ रहने लगा.



शीघ्र ही इस बात का पता चल गया कि मलुंडा
सफेद गैंडों का एक अच्छा मुखिया होगा.

इस कहानी से संबंधित

पांच करोड़ सालों से गैंडे धरती पर रह रहे हैं. इतने लंबे समय के बाद भी उन में अधिक परिवर्तन नहीं आया है.

लेकिन उनकी संख्या बहुत घट गई है.

सफेद गैंडे अफ्रीका में पाए जाते हैं. कुछ समय पहले वह लगभग विलुप्त हो चुके थे. लेकिन कुछ लोग चाहते थे कि उनकी प्रजाति मिटनी नहीं चाहिए. यह लोग गैंडों को पकड़ कर उन जगहों पर ले आए जहाँ उनका संरक्षण किया जा सकता था. अब उनकी संख्या बढ़ने लगी है.

मलुंडा की कहानी एक सच्ची कहानी है.1970 में 20 सफेद गैंडों को पकड़ कर इंग्लैंड के एक ज़ू में लाया गया था. नर गैंडे का नाम मलुंडा ही था. मलुंडा का लंबा सींग वास्तव में टूट गया था. उसका जहाज़ में ही उपचार किया गया था और इंग्लैंड पहुँचने तक वह ठीक हो गया था. लेकिन उसका व्यवहार अजीब था. उसने अपने को उस दिन तालाब के पानी में देखा था. लेकिन कोई नहीं जानता कि क्या वह सच में पानी में अपने प्रतिबिंब का देख रहा था या नहीं.

